बोर्ड नमूना प्रश्न-पत्र
2022-23

हिन्दी - X | **समय : 3 घंटे 15 मिनट** | **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों के आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
6. प्रश्न सं. 17,18,19,20,22,23 आन्तरिक विकल्प हैं।

खंड 'अ'

1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- [प्रश्न संख्या 1 से 5]

जयशंकर प्रसाद जी का जन्म काशी के सुंघनी साहु के प्रतिष्ठित घराने में हुआ था। यह घराना अपनी दानवीरता के लिए प्रसिद्ध था। इन्होंने क्वींस कॉलेज में सातवीं कक्षा तक पढ़ा था पर घर में ही संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, फारसी का व्यापक अध्ययन किया था। प्रसाद जी मूलतः कवि थे। उनकी समस्त रचनाओं में उनका कवि हृदय झलकता है। उन्होंने प्रारम्भ में ब्रज भाषा में कविता लिखी। उनकी विधायनी कृतित्व की क्षमता का परिचय "झरना" के प्रकाशन से सांकेतिक रूप में मिला। जहाँ तक छायावाद की प्रतिष्ठा का प्रश्न है, प्रसाद जी ने उसका बीजारोपण "झरना" में ही किया। "झरना" के पश्चात् "आँसू" का प्रकाशन काव्य के क्षेत्र की हिन्दी साहित्य में बहुत बड़ी घटना है।

(1) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है- [1]
(अ) छायावाद (ब) सरस गीत
(स) जय शंकर प्रसाद (द) झरना

(2) प्रसाद जी संबंधित थे- [1]
(अ) सुंघनी साहु घराने से (ब) कलवार घराने से
(स) ठाकुर घराने में (द) हालदार घराने से

(3) प्रसाद जी ने सर्वप्रथम कौन-सी भाषा में कविता लिखी? [1]
(अ) अवधी (ब) ब्रज
(स) राजस्थानी (द) हिन्दी

(4) निम्न में से कौन-सी रचना जय शंकर प्रसाद की है? [1]
(अ) आँसू (ब) झरना
(स) लहरगीत (द) विधायनी

(5) जयशंकर प्रसाद ने छायावाद का बीजारोपण किस रचना में किया? [1]
(अ) झरना (ब) आँसू
(स) लहर (द) कामायनी

निम्नलिखित अपठित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- [प्रश्न सं. 6 से 10]

पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।
है अनिश्चित, किस जगह पर
सरित, गिरि, गह्वर मिलेंगे,
है अनिश्चित, किस जगह पर
बाग, वन सुन्दर मिलेंगे।
किस जगह यात्रा खतम हो,
जायेगी, यह भी अनिश्चित,
है अनिश्चित, कब सुमन, कब
कंटकों के शर मिलेंगे।

(6) उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक है- [1]
(अ) जगह की अनिश्चितता (ब) पथ की पहचान
(स) यात्रा (द) फूल और काँटे

(7) 'बटोही' शब्द का अर्थ है- [1]
(अ) पथिक (ब) मजदूर
(स) नाविक (द) बाट जोहने वाला

(8) 'सुमन' का पर्यायवाची युग्म है- [1]
(अ) कुसुम, अनल, नभ (ब) मंजरी, दृग, निर्जन
(स) फूल, पुष्प, प्रसून (द) कृशानु, कंटक, पुष्प

(9) उक्त काव्यांश में कौन-सी शब्द-शक्ति का प्रयोग हुआ है? [1]
(अ) अभिधा (ब) लक्षणा
(स) व्यंजना (द) कोई नहीं

(10) प्रस्तुत काव्यांश में 'कंटकों के शर' का अर्थ है- [1]
(अ) दुःख (ब) सुख
(स) रेगिस्तान (द) बगीचा

(11) 'उन्मेष' शब्द का अर्थ है- [1]
(अ) प्रकाश (ब) दीप्ति
(स) उजाला (द) उपर्युक्त सभी

(12) "जॉर्ज पंचम की नाक" कहानी है- [1]
(अ) व्यंग्यात्मक (ब) संस्मरणात्मक
(स) ऐतिहासिक (द) बाल मनोवैज्ञानिक

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. गाय, आदमी, पुस्तक आदि शब्द ..... संज्ञा का बोध कराते हैं।[1]
2. जिस सर्वनाम का प्रयोग.....के लिए किया जाता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। [1]
3. ऐसे शब्द जो, संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं..... कहलाते हैं। [1]
4. अविकारी शब्द ही.....शब्द भी कहलाते हैं। [1]
5. "अनुज" शब्द में ..... उपसर्ग है। [1]
6 "मानवता" शब्द में मूल शब्द..... है। [1]

3. निम्नलिखित अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 20 शब्दों में लिखिए-

1. 'व्यंजन' संधि की परिभाषा लिखिए। [1]
2. "तत्पुरुष समास" के दो उदाहरण लिखिए। [1]
3. 'काठ का उल्लू होना' मुहावरे का अर्थ लिखिए। [1]
4. 'जैसी करनी वैसी भरनी' लोकोक्ति का वाक्य प्रयोग लिखिए। [1]
5. 'यतींद्र मिश्र' का जन्म कब और कहाँ हुआ? [1]
6. महावीर प्रसाद ने क्या तर्क देकर स्त्री शिक्षा का समर्थन किया? [1]
7. बच्चे की दंतुरित मुस्कान का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ा?[1]
8. गिरिजाकुमार माथुर की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए। [1]
9. "संगतकार" कविता किसके महत्व पर विचार करती है? [1]
10. भदंत आनंद कौसल्यायन ने सभ्यता को किसका परिणाम माना है? [1]
11. "रानी आए और नाक न हो" पंक्ति में किसकी नाक न होने की बात कही गई है? [1]
12. 'अज्ञेय' किस विषय के विद्यार्थी रहे हैं? 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ के आधार पर बताइए। [1]

खण्ड-"ब"

प्रश्न संख्या 4 से 16 तक के लिए प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकतम उत्तर सीमा 45 शब्द हैं।

4. 'माता का अँचल' पाठ से बाल स्वभाव की किस विशेषता का पता चलता है? [2]

5. "शांति और अहिंसा की प्रतीक ये पताकाएँ।" इन पताकाओं का क्या महत्त्व बताया गया है? "साना साना हाथ जोड़ि" पाठ के आधार पर बताइए। [2]

6. दुलारी का परिचय टुन्नू से कहाँ और कैसे हुआ? [2]

7. काल के आधार पर क्रिया के भेदों को उदाहरण सहित समझाइए। [2]

8. गोपियों ने ऊधौ को बड़ भागी क्यों बताया है? [2]

9. बाल गोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे? [2]

10. 'यह दंतुरित मुस्कान' कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए। [2]

11. "छाया मत छूना मन, होगा दुःख दुना" पंक्ति में कवि क्या कहना चाहता है? [2]

12. "काशी संस्कृति की पाठशाला है।" क्यों? नौबत खाने में इबादत पाठ के आधार पर बताइए। [2]

13. संस्कृति क्या है? अपने शब्दों में लिखिए। [2]

14. "नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत बोलना उनके अपढ़ होने का प्रमाण नहीं' उक्त कथन को पाठ के अन्तर्गत आए उदाहरण द्वारा समझाइए। [2]

15. सूरदास का जीवन परिचय एवं कृतित्व संक्षेप में लिखिए। [2]

16. रामवृक्ष बेनीपुरी का जीवन परिचय एवं कृतित्व संक्षेप में लिखिए। [2]

खण्ड-"स"

17. निम्नलिखित पठित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। [1+2]

फादर बुल्के संकल्प से संन्यासी थे। कभी-कभी लगता है वह मन से संन्यासी नहीं थे। रिश्ते बनाते थे तो तोड़ते नहीं थे। दसियों साल बाद मिलने के बाद भी उसकी गंध महसूस होती थी। वह जब भी दिल्ली आते जरूर मिलते-खोजकर, समय निकालकर, गर्मी, सर्दी, बरसात झेलकर मिलते, चाहे दो मिनट के लिए ही सही। यह कौन संन्यासी करता है? उनकी चिन्ता हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की थी। हर मंच से इसकी तकलीफ बयान करते, इसके लिए अकाट्य तर्क देते।

अथवा

आज पीछे मुड़कर देखती हूँ तो इतना तो समझ में आता ही है क्या तो उस समय मेरी उम्र थी और क्या मेरा भाषण रहा होगा। यह तो डॉक्टर साहब का स्नेह था जो उनके मुँह से प्रशंसा बनकर बह रहा था या यह भी हो सकता है कि आज से पचास साल पहले अजमेर जैसे शहर में चारों ओर से उमड़ती भीड़ के बीच एक लड़की का बिना किसी संकोच और झिझक के यों धुआँधार बोलते चले जाना ही इसके मूल में रहा हो।

18. निम्नलिखित पठित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। [1+2]

फटिक सिलानि सौं सुधार्‌यौ सुधा मंदिर,
उदधि दधि को सो अधिकाइ उमगे अमंद।
बाहर ते भीतर लौं भीति न दिखैए 'देव'
दूध को सो फेन फैल्यो आँगन फरसबंद।

अथवा

बादल, गरजो!
घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
ललित ललित, काले घुँघराले,
बाल कल्पना के-से पाले,
विद्युत – छवि उर में, कवि, नवजीवन वाले!
वज्र छिपा, नूतन कविता फिर भर दो-
बादल गरजो!

19. लक्ष्मण व परशुराम के मध्य हुए संवाद को उदाहरण सहित लिखिए। [3]

अथवा

'आत्मकथ्य' कविता के मूल भाव पर विस्तृत प्रकाश डालिए। [3]

20. 'नेताजी का चश्मा' पाठ के आधार पर बताइए कि सेनानी न होते हुए भी चश्मे वाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे? [3]

अथवा

'एक कहानी यह भी' पाठ मन्नू भण्डारी के साधारण लड़की से असाधारण बनने के प्रारम्भिक पड़ावों को प्रकट करता है। समझाइए। [3]

खण्ड-"द"

21. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300-350 शब्दों में एक सारगर्भित निबंध लिखिए। [4]

(अ) मातृ भाषा और उसका महत्व

(1) मातृभाषा का अर्थ एवं परिभाषा
(2) रचनात्मक विकास में मातृभाषा का योगदान
(3) मातृभाषा व राष्ट्रभाषा
(4) उपसंहार

(ब) मेरा प्रिय नेता

(1) नेता का अर्थ
(2) राजनीति की परिभाषा
(3) प्रिय नेता नाम व परिचय
(4) प्रिय नेता का आपके व्यक्तित्व पर प्रभाव

(स) मेरी अविस्मरणीय यात्रा

(1) अपना परिचय
(2) आपके द्वारा की गई यात्राओं का ब्यौरा
(3) आपकी अविस्मरणीय यात्रा का वर्णन
(4) आपके जीवन पर प्रभाव

(द) राजस्थान के मेले

(1) मेलों का सांस्कृतिक महत्व
(2) मेलों का आर्थिक महत्व
(3) राजस्थान के प्रसिद्ध मेले
(4) मेलों की पौराणिक कथाएँ

22. स्वयं को आदर्श नगर बीकानेर का नीरव मानते हुए अशोक नगर जयपुर निवासी अपने मित्र को बहन की शादी में बुलाने हेतु निमंत्रण पत्र लिखिए। [4]

अथवा

अपने प्रधानाचार्य को अंग्रेजी विषय का पद रिक्त होने के कारण कोई अतिरिक्त व्यवस्था हेतु प्रार्थना पत्र लिखते हुए कक्षा कक्ष अध्ययन की वस्तु स्थिति से अवगत कराइए। [4]

23. "नव – अंकुर" विधवा महिला सहायता संस्था जयपुर द्वारा बनाई गई कारपेट की बिक्री हेतु एक विज्ञापन लिखिए। [4]

अथवा

आपके विद्यालय में S.U.P.W शिविर में निर्मित अनुपयोगी सामग्री से उपयोगी सामग्री बिक्री हेतु एक विज्ञापन लिखिए। [4]

उत्तरमाला – बोर्ड नमूना प्रश्न पत्र

खण्ड - अ

1.

(1) (स) जयशंकर प्रसाद
(2) (अ) सुंघनी साहु घराने से
(3) (ब) ब्रज
(4) (अ) आँसू
(5) (अ) झरना
(6) (ब) पथ की पहचान
(7) (अ) पथिक
(8) (स) फूल, पुष्प, प्रसून
(9) (ब) लक्षणा
(10) (अ) दु:ख
(11) (द) उपर्युक्त सभी
(12) (अ) व्यंग्यात्मक

2.

(1) जातिवाचक (2) प्रश्न करने
(3) विशेषण (4)अव्यय
(5) अनु (6) मानव

3.

1. किसी व्यंजन का व्यंजन से अथवा किसी स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं।
2. तत्पुरुष समास के दो उदाहरण है- 1. शरणागत, 2. देशभक्ति।
3. काठ का उल्लू होना मुहावरे का अर्थ- अज्ञानी या मूर्ख होना।
4. वाक्य प्रयोग- सुमन ने समय पर प्रोजेक्ट नहीं दिखाया और उसे उसमें शून्य अंक प्राप्त हुए। ठीक ही हुआ – जैसी करनी वैसी भरनी।
5. यतींद्र मिश्र का जन्म सन् 1977 में अयोध्या (उत्तर प्रदेश) में हुआ।
6. महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने स्त्री शिक्षा को समाज की उन्नति के लिए आवश्यक माना है। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि यदि स्त्री शिक्षा से अनर्थ होता है तो पुरुषों द्वारा किए गए अनर्थ भी उसी शिक्षा के परिणाम होने चाहिए।
7. बच्चे की दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर अत्यंत गहरा प्रभाव पड़ता है। कवि को बच्चे की मुसकान बहुत मनमोहक लगती है जो मृत शरीर में भी प्राण डाल देती है।
8. गिरिजा कुमार माथुर की दो रचनाएँ है- 1. नाश और निर्माण, 2. शिलापंख चमकीले।
9. संगतकार के माध्यम से कवि विवश या ज्ञान के इच्छुक व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है।
10. ज्ञानी एवं बुद्धिमान लोगों द्वारा नए-नए आविष्कार करने की प्रेरणा ही उसकी संस्कृति है जिससे मानवता का कल्याण होता है। इसी संस्कृति का परिणाम सभ्यता है।
11. 'रानी आए और नाक न हो' पंक्ति में जार्ज पंचम की नाक न होने की बात कही गई है।
12. 'अज्ञेय' विज्ञान विषय के विद्यार्थी रहे है।

खण्ड - ब

4. 'माता का अँचल' पाठ से ज्ञात होता है कि बच्चे का माता से सिर्फ दूध पीने का नाता नहीं था उसे उसका पिता ही नहलाता, खाना खिलाता और साथ खेलता था। परन्तु वास्तविक बात यह है कि बच्चा माँ के बिना अधूरा होता है।

5. सफ़ेद बौद्ध पताकाएँ शांति व अहिंसा की प्रतीक हैं, इन पर मंत्र लिखे होते हैं। यदि किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु होती है तो उसकी आत्मा की शांति के लिए 108 श्वेत पताकाएँ फहराई जाती हैं। कई बार किसी नए कार्य के अवसर पर रंगीन पताकाएँ फहराई जाती हैं। इसलिए ये पताकाएँ, शोक व नए कार्य के शुभांरभ की ओर संकेत करते हैं।

6. दुलारी का टुन्नू से पहली बार परिचय तीज के अवसर पर आयोजित 'कजली दंगल' में हुआ था। इस कजली दंगल का आयोजन खोजवाँ बाज़ार में हो रहा था। दुलारी खोजवाँ वालों की ओर से प्रतिद्वंद्वी थी तो दूसरे पक्ष यानि बजरडीहा वालों ने टुन्नू को अपना प्रतिद्वंद्वी बनाया था। इसी प्रतियोगिता में दुलारी का टुन्नू से पहली बार परिचय हुआ था।

7. जिस काल में कोई क्रिया होती है, उस काल के नाम के आधार पर क्रिया का नाम रख देते हैं। अत: काल के अनुसार क्रिया तीन प्रकार की होती है-
(i) भूतकालिक क्रिया- सुषमा पुस्तक पढ़ रही थी।
(ii) वर्तमान कालिक क्रिया- राधिका खाना बना रही है।
(iii) भविष्यत्कालिक क्रिया- सुरेश कल जयपुर जाएगा।

8. गोपियों ने उद्धव को इसलिए बड़भागी कहा है क्योंकि उद्धव श्रीकृष्ण के प्रेम से दूर हैं। उन्हें कृष्ण का प्रेम अपने बंधन में न बाँध सका। ऐसे में उद्धव को प्रेम की वैसी पीड़ा नहीं है जैसी गोपियाँ झेलने को विवश हैं।

9. बालगोबिन भगत कबीर के पक्के भक्त थे। वे कभी झूठ नहीं बोलते थे और हमेशा खरा व्यवहार करते थे। वे किसी की चीज का उपयोग बिना अनुमति माँगे नहीं करते थे। उनकी इन्हीं विशेषताओं के कारण वे साधु कहलाते थे।

10. 'यह दंतुरित मुसकान' कविता के माध्यम से कवि नागार्जुन जी ने एक छोटे बच्चे की मनोहारी मुसकान का सुंदर वर्णन किया है । बच्चे की मुसकान निश्छल होती है । कवि को लगता है कि यह मुसकान मृत व्यक्ति में भी प्राण डाल देगी। ऐसी मधुर मुसकान की सुंदरता को देखकर तो कठोर से कठोर व्यक्ति का दिल भी पिघल जाएगा।

11. 'छाया मत छूना मन, होगा दु:ख दुना' के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि हमारे जीवन में सुख और दुख दोनों ही रहते हैं। बीते हुए समय के सुख को याद कर , अपने वर्तमान के दुख को और अधिक गहरा करना किसी भी तरह से बुद्धिमानी नहीं है।

12. काशी संस्कृति की पाठशाला कहलाती है, क्योंकि शास्त्रों में आनंद-कानन के नाम से प्रतिष्ठित इस नगरी का इतिहास हजारों साल पुराना है। अपितु यहाँ के कलाधर हनुमान जी , विश्वनाथ के मंदिर भारत प्रसिद्ध है। यहाँ पंडित कंठे महाराज है, विद्याधरी हैं, बड़े रामदास जी, मौजुद्दीन व बिस्मिल्ला खां है तथा इन रसिकों से उपकृत करने वाला अपार जन यहाँ है। यहाँ की अपनी विशिष्ट तहजीब, बोली व उत्सव है।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

13. संस्कृत मानव द्वारा किया गया ऐसा कोई आविष्कार या नए तथ्य का ज्ञान, जो मनुष्य के लिए कल्याणकारी होता है, उसे संस्कृति कहते हैं। संस्कृति त्याग की भावना से मजबूत एवं समृद्ध होती है।

14. पुराने समय में स्त्रियों का प्राकृत बोलना उनके अपढ़ होने का सबूत नहीं है, क्योंकि उस समय प्राकृत प्रचलित और लोक व्यवहृत भाषा थी। भवभूति और कालिदास के नाटक जिस समय लिखे गए उस समय शिक्षित समुदाय ही संस्कृत बोलता था, शेष लोग प्राकृत बोलते थे। शाक्य मुनि भगवान बुद्ध और उनके चेलों द्वारा प्राकृत में उपदेश देना, बौद्ध एवं जैन धर्म के हजारों ग्रंथ का प्राकृत में लिखा जाना इस बात का प्रमाण है कि प्राकृत उस समय की लोक प्रचलित भाषा थी, ऐसे में स्त्रियों द्वारा प्राकृत बोलना उनके अपढ़ होने का सबूत कैसे हो सकता है।

15. भक्तिकाल के प्रमुख कृष्ण भक्त एवं सगुण उपासक सूरदास का जन्म सन् 1478 में तथा निधन सन् 1583 में माना जाता है। मान्यतानुसार उनका जन्म दिल्ली के निकट 'सीही ग्राम' में हुआ माना जाता है। वे जन्मांध थे। महाप्रभु वल्लभाचार्य से दीक्षित कवि सूरदास अष्टछाप के भक्त कवियों में सर्वाधिक प्रसिद्ध थे। वे मथुरा और वृंदावन के मध्य गऊघाट पर रहते हुए श्रीनाथ के मंदिर में भजन कीर्तन करते थे। 'सूरसागर, सूरसारावली एवं साहित्य लहरी' उनके प्रमुख ग्रंथ थे। सूर वात्सल्य एवं शृंगार के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं।

16. रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर गाँव में सन् 1899 में हुआ। बचपन में माता-पिता का निधन हो जाने से प्रारम्भिक जीवन कठिनाइयों में व्यतीत हुआ। मैट्रिक तक की परीक्षा पास कर स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय रूप से जुड़ गए। 15 वर्ष की अवस्था में उनकी रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगी। उन्होंने अनेक समाचार-पत्रों का सम्पादन किया।

गद्य की विविध विधाओं पर उन्होंने लेखनी चलाई 'पतितों के देश में' (उपन्यास), 'चिता के फूल' (कहानी), 'अंबपाली' (नाटक); 'माटी की मूरते' (रेखाचित्र); 'पैरों में पंख बाँधकर' (यात्रा-वृत्तांत) आदि हैं। उनकी रचनाओं में स्वाधीनता की चेतना तथा मनुष्यता की चिंता है। विशिष्ट शैलीकार होने के कारण उन्हें 'कलम का जादूगर' कहा जाता है। उनका देहावसान सन् 1968 में हुआ।

खण्ड - स

17. **संदर्भ-** प्रस्तुत गद्यांश सर्वेश्वर दयाल सक्सेना द्वारा लिखित संस्मरण 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' से लिया गया है।

प्रसंग- इसमें लेखक फादर बुल्के के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों को स्मृतियों (यादों) के सहारे प्रकट कर रहे हैं।

व्याख्या- लेखक कहते हैं कि फादर बुल्के दृढ़ विचारों से युक्त संन्यासी थे। उनको देखकर लगता था कि वे मन से संन्यासी नहीं थे क्योंकि वे रिश्ते बनाते थे और रिश्ते मन से निभाते थे। रिश्ते तोड़ते नहीं थे, जबकि संन्यासी मोह, माया से जुड़कर नहीं चलते हैं। दसों साल बीतने के बाद भी अगर फादर से मिलना होता था तब भी उस दस साल पहले बने मीठे रिश्ते की महक उनसे महसूस होती थी। लेखक आगे कहते हैं कि फादर जब भी इलाहाबाद से दिल्ली आते थे तब सर्दी, गर्मी, बारिश की चिंता किये बिना खोजकर हमसे जरूर मिलते, चाहे उनका यह मिलन दो मिनट का ही क्यों न हो। लेखक फादर बुल्के के बारे में कहते हैं कि कौन संन्यासी इतना करता है कि रिश्तों को बनाये रखे। लेखक को फादर के व्यक्तित्व में एक और बात बहुत अच्छी लगती थी वह थी हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की चिंता। वे हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में देखने के लिए हर मंच से हमेशा अपनी इस तकलीफ को बताते थे। उनकी कही बातों का किसी के पास तोड़ नहीं होता था क्योंकि वे हिन्दी के पक्ष में ठोस, महत्वपूर्ण व विचारात्मक बातें ही कहते थे।

विशेष-

(i) हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के प्रति फादर बुल्के की चिंता को लेखक ने बताया है।

(ii) भाषा शैली सरल व सारगर्भित है।

अथवा

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश लेखिका मन्नू भंडारी द्वारा लिखित आत्मकथ्य 'एक कहानी यह भी' से लिया गया है।

प्रसंग- लेखिका अपने बीते समय को याद करती है तथा पिता के विचारों पर सोच-विचार भी करती है।

व्याख्या- लेखिका मन्नू भण्डारी कहती है कि अतीत में पीछे मुड़कर देखती हूँ तो इतना ही समझ आता है कि क्या तो उस समय मेरी आयु थी और किस तरह का मेरा भाषण रहा होगा? या फिर यह भी हो सकता है कि आज से पचास साल पहले बिना संकोच के अजमेर जैसे छोटे शहर में बिना झिझक के आत्मविश्वास के साथ एक लड़की के धुआँधार बोलते चले जाना ही बड़ी बात थी। यही बात जरूर डॉ. साहब की प्रशंसा के मूल में रही होगी।

विशेष-

(i) लेखिका ने युवावस्था के समय दिए अपने जोश भरे भाषण का वर्णन किया है।

(ii) भाषा शैली सरल एवं प्रवाहमय है।

18. **संदर्भ-** प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित कवि देव के छन्दों से लिया गया है।

प्रसंग- कवि ने दधिया चाँदनी का वर्णन किया है।

व्याख्या- कवि ने यहाँ दधिया चाँदनी से नहाई रात्रि को अमृत-मंदिर के रूप में माना है, जो उज्ज्वल स्फटिक की चट्टान पर बना हुआ है। स्फटिक अत्यंत उज्ज्वल सफेद पारदर्शी कीमती नग होता है। प्रकृति में चारों ओर बिखरी चाँदनी को देखकर कवि को ऐसा लगता है मानो दही का सागर उमड़ता चला आ रहा हो देव कहते हैं कि इस सुधा-मंदिर की दीवार भीतर-बाहर कहीं से भी दिखाई नहीं पड़ रही है और इसके आँगन के फर्श पर मानो दूध का झाग फैला पड़ा हो।

विशेष-

(i) प्रस्तुत कवित्त ब्रजभाषा में रचित है।

(ii) इसमें पद्य में तत्सम शब्दों का पुट मिलता है, जैसे – सुधा, उदधि, दधि आदि।

(iii) इसमें गेयता का माधुर्य गुण विद्यमान है।

अथवा

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' के 'आत्मकथ्य' कविता से लिया गया है। यह कविता कवि जयशंकर प्रसाद की है।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

प्रसंग- इसमें कवि अपनी जीवन गाथा न सुनाने के संदर्भ में वर्णन कर रहा है।

व्याख्या- उत्साह कविता में कवि कहता है कि हे बादलो! तुम गरजना करते हुए आओ। तुम उमड़-घुमड़ कर ऊँची आवाज करते हुए संपूर्ण आकाश को घेरते हुए छा जाओ। अरे बादल! तुम सुन्दर-सुन्दर और घुमावदार काले रंग वाले हो और तुम बच्चों की विचित्र कल्पनाओं की पतवारों तथा पालों के समान लगते हो। हे नवजीवन प्रदान करने वाले बादल रूपी कवि! तुम्हारे हृदय में बिजली की कांति और वज्र के समान कठोर गर्जना छिपी हुई है। तुम अपनी बिजली की चमक और भीषण गर्जना से जनमानस में एक नई चेतना का संचार कर दो। कवि बादल के गरजने का आह्वान करता है।

विशेष-

(i) काव्यांश की भाषा खड़ी बोली है, जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों का पुट है।

(ii) इसमें नवीन उपमाओं और रूपकों का सुंदर समावेश हुआ है।

19. लक्ष्मण हँसकर- परशुराम से बोले-हे देव! मेरी समझ से सारे धनुष एक समान हैं। पुराने धनुष को तोड़ने से क्या लाभ-हानि, श्रीराम ने इसे नए के धोखे में देखा था। लेकिन यह तो छूते ही टूट गया, इसमें श्रीराम का क्या दोष है? इसलिए हे मुनि! आप बिना कारण ही क्रोध क्यों कर रहे हैं? अपने फरसे की ओर देखकर परशुराम बोले- रे मूर्ख! तूने मेरे स्वभाव को अभी नहीं सुना है। बालक समझकर मैं तुम्हारा वध नहीं कर रहा हूँ। रे बुद्धिहीन! क्या तू मुझे केवल मुनि ही समझ रहा है। मैं बाल-ब्रह्मचारी तथा अत्यधिक क्रोधी हूँ तथा सारे संसार को पता है कि मैं क्षत्रियों के कुल का घोर शत्रु हूँ। मैंने अपनी भुजाओं के बल पर ही इस पृथ्वी को अनेक बार भूप-विहीन किया है अर्थात् भूमि को राजाओं से रिक्त किया है और अनेक बार उनके राज्यों की भूमि को जीतकर ब्राह्मणों को दान कर चुका हूँ। हे राजपुत्र! मेरे फरसे को देखो, यह सहस्रबाहु की भुजाओं को काटने वाला है। हे राजपुत्र! अपने माता-पिता को शोक-ग्रस्त मत करो। क्षत्राणियों के गर्भो में शिशुओं को मारने वाला मेरा यह फरसा अत्यधिक भयंकर है।

अथवा

'आत्मकथ्य' कविता में कवि ने जीवन के यथार्थ एवं अभावों का मार्मिक अंकन किया है। कवि ने अपने जीवन को सामान्य व्यक्ति का जीवन बताया है और उसने उन क्षणों का स्मरण किया है जब कुछ क्षणों के लिए उसके जीवन में सुख आया था। वह सुख टिक नहीं सका। अब वह उस सुख की कल्पना ही करता है। कवि को अपने जीवन में दूसरों से धोखे मिले हैं। वह अपनी जीवन कथा में उनका उल्लेख नहीं करना चाहता है।

20. सेनानी न होते हुए भी लोग चश्मेवाले को कैप्टन इसलिए कहते थे, क्योंकि-

- कैप्टन चश्मेवाले में नेताजी के प्रति अगाध लगाव एवं श्रद्धा भाव था।
- वह शहीदों एवं देशभक्तों के अलावा अपने देश से उसी तरह लगाव रखता था जैसा कि फौजी व्यक्ति रखते हैं।
- उसमें देश प्रेम एवं देशभक्ति का भाव कूट-कूटकर भरा था।
- वह नेताजी की मूर्ति को बिना चश्मे के देखकर दुखी होता था।

अथवा

आत्मकथ्य में उन्होंने उन व्यक्तियों और घटनाओं के बारे में लिखा है जो उनके लेखकीय जीवन से जुड़े हुए हैं। संकलित अंश में मन्नू जी के किशोर जीवन से जुड़ी घटनाओं के साथ उनके पिताजी और उनकी कॉलेज की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का व्यक्तित्व विशेष तौर पर उभरकर आया है, जिन्होंने आगे चलकर उनके लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। लेखिका ने यहाँ बहुत ही खूबसूरती से साधारण लड़की के असाधारण बनने के प्रारंभिक पड़ावों को प्रकट किया है।

खण्ड - द

21.

(अ) मातृ भाषा और उसका महत्व

(1) मातृभाषा का अर्थ एवं परिभाषा- जन्म लेने के बाद से ही मनुष्य जो प्रथम भाषा सीखता है उसे ही मातृभाषा कहते हैं। मातृभाषा किसी भी व्यक्ति की सामाजिक भाषायी पहचान होती है।

सभी संस्कार एवं व्यवहार इसी के द्वारा हम पाते हैं। इसी भाषा से हम अपनी संस्कृति के साथ जुड़कर उसकी धरोहर को आगे बढ़ाते हैं। भारत में सैकड़ों प्रकार की मातृभाषाएं बोली जाती है जो देश की विविधता और अनूठी संस्कृति को बयान करती है।

(2) रचनात्मक विकास में मातृभाषा का योगदान- मातृभाषा को बढ़ावा देने का उद्देश्य दुनिया में भाषायी और सांस्कृतिक विविधता और बहुभाषिता को बढ़ावा देना है। आज विश्व में भारत की भूमिका और भी अधिक मायने रखती है क्योंकि एक बहुभाषी राष्ट्र होने के नाते मातृ भाषाओं के प्रति भारत का उत्तरदायित्व कहीं अधिक मायने रखता है।

मातृभाषा के बिना किसी भी प्रकार की उन्नति संभव नहीं है। हम मातृभाषा के महत्व को इस रूप में समझ सकते हैं कि अगर हमको पालने वाली, 'माँ' होती है तो हमारी भाषा भी हमारी माँ है। हमको पालने का कार्य हमारी मातृभाषा भी करती है इसलिए 'माँ' और 'मातृभाषा' को बराबर दर्जा दिया गया है।

मातृभाषा में शिक्षण बच्चे के मानसिक विकास हेतु बहुत लाभदायक होता है। मातृभाषा का पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान होता है। ज्ञान तथा मस्तिष्क का विकास मातृभाषा द्वारा ही सम्भव हो सकता है।

(3) मातृभाषा व राष्ट्रभाषा- हिंदी हम भारतीयों की मातृभाषा है। हिन्दी हमारी, आपकी और हम सब की भाषा है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार में 43.6 फ़ीसदी लोगों ने हिंदी को मातृभाषा स्वीकार किया था।

आज हिंदी हर विषय में, हर क्षेत्र में अपना ध्वज फहराते हुए आगे बढ़ती ही जा रही है। चाहे वह विज्ञान का क्षेत्र हो या इंटरनेट की दुनिया, सब जगह हिंदी का बोलबाला है।

परन्तु फिर भी ना जाने क्यूँ आज भी कुछ भारतवासी अपनी मातृभाषा व राष्ट्रभाषा को बोलने में गौरव की अनुभूति नहीं कर पाते। भारत में तीन साल के बच्चे को अंग्रेजी भाषा सीखने पर ज्यादा जोर दिया जाता है।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

आज सभी भारतवासियों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है कि वे अपनी मातृभाषा सीखें, प्रयोग करें और इस धरोहर को संभाल के रखें।

(4) उपसंहार- मातृभाषा को संरक्षण नहीं मिलने की वजह से भारत में लगभग 50 मातृ भाषाएँ पिछले 5 दशकों में विलुप्त हो चुकी है। आज जरूरत है हमें अपनी-अपनी मातृभाषा को अपनाने की और आने वाली पीढ़ी को सिखाने की ताकि भाषा के जरिए हमारी संस्कृति हमेशा फलती फूलती रहे।

(ब) मेरा प्रिय नेता

(1) नेता का अर्थ- नेता का तात्पर्य नेतृत्व क्षमता से युक्त व्यक्ति जो सर्वमान्य तो होता ही है साथ ही उसमें सभी को साथ लेकर चलने की काबिलियत भी होती हैं। एक सफल नेता के लिए अच्छा वक्ता होना भी अहम गुण माना जाता है तभी वह अपनी बात उसी रूप में दूसरों तक पहुंचा पाता हैं।

(2) राजनीति की परिभाषा- राजनीति शब्द- 'राज' और 'नीति' दो शब्दों से मिलकर बना है। राज से राज्य तथा नीति से नियम, अर्थ लगाया जा सकता है।

रामचन्द्र वर्मा उन नियमों तथा विधान आदि को राजनीति मानते हैं जिनके अनुसार किसी राज्य का कोई राजा शासन कार्य चलाता है।'

(3) प्रिय नेता नाम व परिचय- मेरे प्रिय नेता नरेन्द्र मोदी जी है। 17 सितंबर 1950 को बड़नगर में जन्में मोदीजी बचपन में स्कूल से आने के बाद तथा छुट्टी के दिन भाई के साथ रेलवे स्टेशन पर चाय बेचा करते थे। धर्म के प्रति इनका गहरा लगाव बचपन से ही था।

युवावस्था में मोदीजी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद और विभिन्न छात्र संगठनों से जुड़े रहे। इसके बाद ये भारतीय जनता पार्टी से जुड़े और 2001 में राज्य के मुख्यमंत्री भी बने। हिन्दू मुस्लिम दंगे भी इसी वर्ष हुए इस कारण उन्हें मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा भी देना पड़ा।

नरेंद्र मोदी का राजनीतिक जीवन कोई संयोग नहीं बल्कि कठिनाइयों से भरा था। एक कर्मयोगी की भांति अपने काम और भविष्य की योजनाओं के दम पर उन्होंने सदैव जनहित के लिए स्वयं को अर्पित कर दिया।

जब 2014 में भारतीय जनता पार्टी ने नरेंद्र मोदी को अपना प्रधानमंत्री उम्मीदवार चुना तो भारतीय राजनीति के नये दौर की शुरुआत मानो तभी हो गई। हर हर मोदी, घर घर मोदी, अच्छे दिन आने वाले है। जैसे जनप्रिय स्लोगन लोगों के जेहन में उतर गये थे।

(4) प्रिय नेता आपके व्यक्तित्व पर प्रभाव- मोदीजी की एक खूबी मुझे बेहद प्रिय है वह है- उनका साहस, कभी भी कड़े निर्णय लेने से वे न तो घबराते है और ना ही निर्णय लेने के बाद पीछे हटते हैं। 2014 के चुनावों में उनका सीधा मुकाबला 60 वर्षों तक भारत पर शासन करने वाले सत्ताधारी परिवार से था।

मगर जनता के प्रति उनके भरोसे और स्वच्छ छवि ने कांग्रेस को बिना लड़े ही परास्त कर दिया। उनकी जीत का एक बड़ा कारण उनकी भाषण शैली व व्यक्तित्व भी हैं। वे सदैव हिंदी में भाषण देते है।

आमजन की संवेदना, संस्कार, कार्यकुशलता और सूझबूझ में नरेंद्र मोदी जैसा नेता आज के भारत में दूसरा नहीं हैं।

उनके पहले कार्यकाल में प्रधानमंत्री रहते देश में कई बड़े कार्य हुए स्वच्छता और अर्थव्यवस्था की बंधकों की मुक्ति तथा डिजिटल भारत के लिए कई योजनाएँ चलाई गई।

गरीबों के लिए बिजली, घर, गैस कनेक्शन किसानों के लिए सम्मान निधि, छात्रों के लिए स्कोलरशिप, वृद्धों के लिए पेंशन इस तरह समाज के सभी वर्गों को अपनी योजनाओं का लाभार्थी बनाया। मैं मोदीजी की तरह कार्यकुशल एवं कुशलवक्ता बनना चाहता हूँ और देश के लोगों की सेवा करना चाहता हूँ।

(स) मेरी अविस्मरणीय यात्रा

(1) अपना परिचय- कई लोगों को भागना दौड़ना, नाचना ,गाना, कविताएँ लिखना, किताबें पढ़ना आदि पसंद होते हैं। उसी प्रकार मुझे यात्राएँ करने का शौक है। मुझे यात्रा करना बहुत पसंद आता है। जंगल की हरियाली देखना, पेड़ पौधों से बातें करना। कभी ऊँचे-ऊँचे पहाड़ कभी सपाट जमीन पर बहती हुई नदी के साथ बहना। ऐतिहासिक किले तथा ऐतिहासिक स्थानों में जाकर इतिहास को फिर से जीना, इतिहास को समझना। शहरों की ऊँची आसमानों से बातें करती हुई इमारतों को नजर उठा कर देखना। तो कभी गाँव की सभ्यता को समझना। कभी ट्रेन से यात्रा करना। तो कभी ऑटो, बस रिक्शा से यात्रा करना।

(2) आपके द्वारा की गई यात्राओं का ब्यौरा- ऐसे कई कारण है जिनकी वजह से मुझे यात्रा करना बहुत पसंद है। मैंने अपने जीवन में कई यात्राएँ की है। जंगलों के ऊँचे ऊँचे पहाड़ से देखें शहरों की ऊँची ऊँची इमारत देखी है। कई बार ऐतिहासिक स्थानों पर जाकर इतिहास में खो गया हूँ। कई बार मंदिर में जाकर अचल मन को शांत किया है। ऐसी कई यात्राएँ मैंने की है। परंतु इन सब में से मेरी अविश्वसनीय और पसंदीदा यात्रा दिल्ली की याद आ रही है।

(3) आपकी अविस्मरणीय यात्रा का वर्णन- ठंड के मौसम में की गई दिल्ली की यात्रा मुझे आज भी याद है। मेरी यह अविस्मरणीय यात्रा है जो मुझे अपने जीवन भर याद रहेगी। इस यात्रा में जो सुखद अनुभव किया है शायद ही मैंने किसी अन्य यात्रा में किया हो। यूं तो दिल्ली एक भीड़भाड़ भरा शहर है। हमने जब दिल्ली की यात्रा करने के बारे में विचार किया तो दिल्ली में यात्रा करें या ना करें इस बात पर चर्चा की गई। दिल्ली अपने सर्दी के लिए काफी मशहूर है। मुझे तारीख ठीक से तो याद नहीं पर शायद वह जनवरी का अंतिम सप्ताह था जब हम दिल्ली आए। सुबह के समय दिल्ली पहुँचने के बाद हम जैसे-जैसे दिल्ली की ओर बढ़ते जा रहे थे वैसे वैसे कोहरा बढ़ता जा रहा था। सुबह के लगभग 7:00 या 8:00 बज चुके थे पर कोहरा घना होने के कारण कुछ दिखाई ना दे रहा था। चारों तरफ कोहरा ही कोहरा छाया हुआ था। कोहरे की चादर में एक दूसरे को भी देख पाना काफी मुश्किल हो रहा था। हमने उस समय जो ठंड महसूस कि वह शायद ही शब्दों में बयां कर पाऊं। शरीर का हर अंग सर्दी से कांप रहा था। ऊपर से सर्द हवा के झोंके इनसे ऐसा महसूस हो रहा था मानो जैसे हम बर्फ पर खड़े हैं। स्टेशन से बाहर निकल कर हमने अपने स्थान की ओर प्रस्थान किया। मेट्रो ट्रेन से चाँदनी चौक तक यात्रा की। हम दिल्ली के लोगों के चकाचौंध तथा भागदौड़ भरी जिंदगी देखकर दंग रह गए।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

शाम के समय हमने चाँदनी चौक बाजार का लुफ्त उठाया। तंग गलियों में सजा बाजार हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है। रास्ते के किनारे लगी वह चूड़ियाँ, कंगन और बालियों की दुकान हमें अपनी ओर बुलाती है। इतना सुंदर बाजार मैंने पहले कभी शायद देखा था। जामा मस्जिद चाँदनी चौक न्यू दिल्ली में स्थित है। यह मुगलों द्वारा बनाया गया वास्तुकला का एक उत्तम उदाहरण है। यह वास्तुकला शाहजहाँ द्वारा बनाई गई थी। यहाँ एक साथ 25000 लोग बैठ कर एक साथ नमाज पढ़ सकते है।

दिल्ली में जो दूसरा स्थल हमने देखा वह है इंडिया गेट। इंडिया गेट जनपद के पास स्थित है। यह तो हम सभी जानते हैं कि इंडिया के स्वतंत्रता का राष्ट्रीय स्मारक है। दिल्ली में स्थित लोटस मंदिर एक आकर्षण का मुख्य केंद्र है। लोटस मंदिर में दिनभर पर्यटकों का आना-जाना शुरु रहता है। यह एक ऐसा खूबसूरत स्मारक है जो लोगों का मन अपनी तरफ मोह ले जाता है। इसकी खूबसूरती ऐसी है कि वह लोगों को आश्चर्य में डाल देती है।

(4) आपके जीवन पर प्रभाव- सर्दी में दिल्ली में जो ठंडा वातावरण होता है। उसका हमने पूरा लुत्फ उठाया। हमने कई प्रसिद्ध इमारतों को देखा, उनकी कलाकरी को देखा। इन सब के कारण मेरी दिल्ली की यात्रा अविश्वसनीय रही।

(द) राजस्थान के मेले

(1) मेलों का सांस्कृतिक महत्व- मेले धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्व के हो सकते हैं। इनका एक उद्देश्य लोगों के जीवन में उत्साह एवं उमंग का संचार करना भी होता हैं। यहाँ समस्त प्रकार के मनोरंजन के साधन उपलब्ध होते हैं खासकर मेले बच्चों के लिए विशिष्ट हो जाते हैं। राजस्थान में सामाजिक, धार्मिक और पशु मेले सर्वाधिक लगते हैं इन सभी का अपना अपना महत्व हैं।

(2) मेलों का आर्थिक महत्व- वस्तुओं तथा उत्पादों की बिक्री के लिहाज से भी मेलों का बड़ा महत्व है। हजारों लोगों को मेलों में रोजगार मिलता है। वही सरकार को भी कर मिलता हैं। राजस्थान एक कृषि प्रधान राज्य है। कृषकों के लिए यह मनोरंजन का अच्छा माध्यम बन रहा हैं। नित्य के उबाऊ जीवन से दूर वे शान्ति का एहसास इन स्थलों पर आकर महसूस करते हैं।

(3) राजस्थान के प्रसिद्ध मेले- राजस्थान एक समृद्ध संस्कृति और अपनी ऐतिहासिक धरोहर को सम्भाले एक बड़ा राज्य हैं। यहाँ के लोगों में धर्म के प्रति बड़ा झुकाव हैं। तो वहीं अधिकतर लोग कृषि एवं पशुपालन का व्यवसाय करते है इसलिए यहाँ पर कृषि एवं पशु मेलों का आयोजन भी होता हैं।

(4) उक्त मेलों की पौराणिक कथाएं- ब्रह्मा और मां सावित्री के बीच दूरियां उस वक्त बढ़ीं, जब ब्रह्माजी ने पुष्कर में कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णमासी तक यज्ञ का आयोजन किया। शास्त्रानुसार यज्ञ पत्नी के बिना सम्पूर्ण नहीं माना जाता।

बाबा रामदेव के रूप में प्रसिद्ध हुए श्री कृष्ण के अवतार रामदेव जी ने बाल्यकाल से ही अपनी बाल लीलाएं दिखानी प्रारंभ कर दी थी। ऐसा माना जाता है, कि बाबा रामदेवजी ने 1442 को भादवा सुदी 11 के दिन रुणिचा गांव के राम सरोवर पर सब रुणिचा वासियों के सामने समाधि ली थी। तेजाजी की पूजा समस्त राजस्थान में सर्पों के देवता के रूप मे की जाती है। लोक विश्वास है कि इनके नाम की राखी (सूत्र) बाँध देने से सर्प का काटा तुरंत जहर के प्रभाव से छूट जाता है।

22. आदर्श नगर,
बीकानेर।
दिनांक: 11 जनवरी, 20XX
प्रिय मित्र राजेश,
सप्रेम नमस्कार!

आशा है तुम स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे और अपने स्कूल की पढ़ाई में व्यस्त होंगे। दोस्त राजेश मैं आज तुम्हें एक विशेष प्रयोजन से यह पत्र लिख रहा हूँ। तुमको यह जानकार खुशी होगी कि मेरी बहिन की शादी दिनांक 21 जनवरी, 20XX को होनी निश्चित हुई है। इस मांगलिक वेला पर मैं तुम्हें सपरिवार सादर आमंत्रित करता हूँ। आशा है कि तुम जरूर आओगे।

अपने माता- पिता को मेरा चरण-स्पर्श कहना।
तुम्हारा मित्र
नीरव

अथवा

सेवा में,
प्रधानाचार्य जी,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
जोधपुर।

विषय – अंग्रेजी विषय का पद रिक्त होने के कारण अतिरिक्त व्यवस्था हेतु।

महोदया,

सविनय निवेदन यह है कि मैं इस विद्यालय की दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। हमारी परीक्षाएँ सितंबर माह में होनी हैं, परंतु अंग्रेजी का पाठ्यक्रम अभी शुरू भी न हो सका है। इसका कारण अंग्रेजी विषय का पद लंबे समय से रिक्त होना है। इस कारण सभी विद्यार्थियों की पढ़ाई में बाधा आ रही है।

अत: आपसे प्रार्थना है कि अंग्रेजी विषय के अध्यापन हेतु किसी योग्य शिक्षक को नियुक्त किया जाए। ताकि हमारी पढ़ाई सुचारू रूप से चल सके।

सधन्यवाद।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
मोहित
दसवीं 'अ'
17, सितंबर 20xx

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

23.

सुनहरा मौका | सुनहरा मौका

नव अंकुर

विधवा महिला सहायता संस्था, जयपुर
द्वारा
बनाए गए कारपेट की बम्पर सेल में पधारिए।
दिनांक - 20 जुलाई – 25 जुलाई 20XX
समय – सुबह 9 से सायं 5 बजे तक

कम दाम | अच्छी क्वालिटी

पता: नव अंकुर संस्था, चौड़ा रास्ता, जयपुर।

अथवा

सेल | सेल

प्रदर्शनी

विद्यालय में S.U.P.W. शिविर में निर्मित
अनुपयोगी सामग्री से उपयोगी सामग्री
की बिक्री।
दिनांक – 20 सितंबर , 20XX
समय – सुबह 10 से सायं 4 बजे तक

पता: रा. उ. मा. विद्यालय, लाल सागर, जोधपुर।

UTKARSH CLASSES